Roll No. : .....

Total No. of Questions : **11**] [Total No. of Printed Pages : **4**

BEED–310

B.A. B.Ed. (IIIrd Year) Examination, 2023

HINDI LITERATURE

Paper - I (CC-1)

(आधुनिक काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **60***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 8 = 16)**

नोट :– सभी **आठ** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 4 × 5 = 20)**

नोट :– सभी **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न में विकल्प का चयन कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **4** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 8 × 3 = 24)**

नोट :– पाँच में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) 'प्रथम रश्मि' कविता पंत जी के कौनसे काव्य संग्रह में संकलित है ?

   (ii) 'निराला' के किन्हीं **दो** काव्य संग्रहों के नाम लिखिए।

   (iii) 'आधुनिक युग की मीरा' किसे कहा गया है ?

   (iv) 'कुरुक्षेत्र' की कथावस्तु किस पर आधारित है ?

   (v) 'तोड़ती पत्थर' कविता का मूल भाव बताइए।

   (vi) 'पोशोला की प्रतिध्वनि' कविता के रचयिता कौन हैं ? इसका मूल प्रतिपाद्य क्या है ?

(vii) 'अज्ञेय' की कौनसी कृति पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ ?

(viii) 'बादल राग' कविता के रचयिता कौन हैं ? यह कौनसे काव्य संग्रह में संकलित है ?

खण्ड–ब

2. स्नेह-हीन तारों के दीपक,
श्वास-शून्य थे तरु के पात,
विचर रहे थे, स्वप्न अवनि में
तम ने था मंडप ताना।
कूक उठी सहसा तरु-वासिनि
गा तू स्वागत का गाना,
किसने तुझको अंतर्यामिनि!
बतलाया उसका आना!

अथवा

माँ है वह! है, इसी से हम बने हैं।
किन्तु हम हैं द्वीप। हम धारा नहीं हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के।
किन्तु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।
पैर उखड़ेंगे। प्लवन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जायेंगे।

3. देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार,
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जोर मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

अथवा

कौन तुम मेरे हृदय में ?
कौन मेरी कसक में नित

मधुरता भरता अलक्षित ?
कौन प्यासे लोचनों में
घुमड़ घिर झरता अपरिचित ?
स्वर्ण-स्वप्नों का चितेरा
नींद के सूने निलय में।
कौन तुम मेरे हृदय में ?

4. इस दंश का दुःख भूलकर
होता समर-आरूढ़ फिर;
फिर मरता, मरता,
विजय पाकर बहाता अश्रु है।
यों ही, बहुत पहले कभी कुरुभूमि में
नर-मेध की लीला हुई जब पूर्ण थी,
पीकर लहू जब आदमी के वक्ष का
वज्रांग पाण्डव भीम का मन हो चुका परिशान्त था।

अथवा

उठी ललक
हिय उमगा
अनकहनी अलसानी
जगी लालसा मीठी,
खड़े रहो ढिंग
गहो हाथ
पाहुन मन-भाने
ओ प्रिय रहो साथ
भर-भर कर अँजुरी पी लो।

5. उस असीम का सुन्दर मंदिर मेरा लघुतम जीवन रे!
मेरी श्वासें करती रहतीं नित प्रिय का अभिनंदन रे!
पद रज को धोने उमड़े आते लोचन में जल कण रे!
अक्षत पुलकित रोम मधुर मेरी पीड़ा का चंदन रे!
स्नेह भरा जलता है झिलमिल मेरा यह दीपक मन रे!

अथवा

मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण,

इसमें कहाँ मृत्यु ?

हे जीवन ही जीवन

अभी पीड़ा है आगे सारा यौवन

स्वर्ण-किरण कल्लोलों पर बहता रे, बालक-मन,

मेरे ही अविकसित राग से

विकसित होगा बन्धु, दिगन्त;

अभी न होगा मेरा अन्त।

6. द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र!

हे त्रस्त-ध्वस्त! हे शुष्क-शीर्ण!

हिम-ताप-पीत, मुधवात-भीत,

तुम वीत-राग, जड़, पुराचीन!!

अथवा

उठे जहाँ भी घोष शान्ति का, भारत स्वर तेरा है,

धर्म-दीप हो जिसके भी कर में, वह नर तेरा है।

तेरा है वह वीर, सत्य पर जो अड़ने जाता है,

किसी न्याय के लिए प्राण अर्पित करने जाता है॥

मानवता के इस ललाट-चंदन को नमन करूँ मैं ?

किसको नमन करूँ में भारत! किसको नमन करूँ मैं ?

खण्ड-स

7. छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

8. प्रयोगवादी काव्यधारा के परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय के काव्य की विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

9. "निराला की कविताओं के मूल में मानवतावाद है।" उक्त उक्ति को स्पष्ट कीजिए।

10. जयशंकर प्रसाद के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

11. "महादेवी वर्मा रहस्यवादी कवयित्री हैं।" इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।